-- प्रथम अध्याय --

हरिशंकर परसाई जी का संक्षिप्त परिचय

हरिशंकर परसाई का संक्षिप्त परिचय

आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक शीर्षस्थ व्यंग्यकार की हैसियत से हरिशंकर परसाई जी को जाना जाता है। प्रेमचंद की परम्परा को परसाई जी ने आगे बढाया है। उन्होने सन १९४८ के आसपास लिखना शुरू किया, पर सन १९५०-५१ में वे जमकर लिखने लगे। वे छटवें और सातवें दशक के प्रतिनिधि लेखक है। परसाई जी ने अपने व्यंग्य साहित्य से जन साधारण को प्रगतिशील जीवन मूल्यों के प्रति सजग करके तथा समाज और राजनीति में घुले हुअे पाखण्ड को स्पष्ट करके, एवं सड़ी गली जीवन व्यवस्था के प्रति विद्रोह कर एक नयी स्वस्थ समाज रचना की स्थापना करने का संकल्प लिया है।

परसाई जी ने जिस व्यंग्य को अपनाया है, वह कथ्य नही, कथन की प्रकृति है। परसाई जी ने कहानी, उपन्यास, निबंध लिखे है, उनमें कथन की प्रकृति व्यंग्य है। परसाई जी का व्यंग्य इतना धारदार, पैना, तथा प्रहार करनेवाला है कि जिसके मार से, पाठक सोचने के लिए मजबूर हो जाता है। उनका व्यंग्य आधुनिक समाज, उसका जीवनदर्शन, धर्म तथा राजनीति, साहित्य तथा संस्कृति, व्यक्ति की विकृत मनःप्रवृत्ति आदि प्राय: सभी विषयों पर तीखी चोट करता है। परसाई जी ने व्यंग्य के सहारे पुराने जड और रूढ़ का मजाक उडाया है, वही अपने आस-पास की राष्ट्रीय तथा अनाराष्ट्रिय विषयकों भी दुर्लक्षित नही करता। परसाई जी की अंतरिक वेदना, दुःख, निराशा से उभरकर आनेवाला तीखा व्यंग्य, यद्यापि हमें उपर से तो हँसाता है, तो साथ ही सोचने को भी मजबूर करता है। परसाई एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो मानव जीवन के सुखद भविष्य के लिये

अपनी भी कुछ जिम्मेदारियाँ मानते हैं। केवल मजा लेने के लिए या मनोरंजन के उद्देश्य से वे व्यंग्य नहीं लिखते बल्कि एक एक शब्द, वाक्य उद्देश्यपूर्ण तथा सार्थक होता है। इसलिए स्वयं कहते हैं — "हँसना और हँसाना, विनोद करना अच्छी बाते होते हुअे भी मैने केवल मनोरंजन के लिए नही लिखा। मेरी रचनाएं पढ़कर हँसी आ जाना प्रासंगिक है — मेरा वेध्कट नही और चीजों की तरह मैं व्यंग्य को उपहास, मखौल न मानकर एक गंभीर चीज मानता हूँ।" [१]

परसाई जी ने अपनी लेखन की शुरुआत शास्त्रीय सवालो से उलझकर नही की बल्कि कुछ जीवन के अहं प्रश्नों के बीच अपने आपको फेंककर, उनसे टकराकर, तथा कुछ मानसिक प्रवृत्ति, चेतना, तथा सामाजिक जीवन के प्रति प्रतिबध्दता के कारण अपने रचनात्मक व्यक्तित्व का सर्जन किया है। प्रश्नों और खुद के संस्कारों के संघर्ष में समस्याएं सुलझी हैं। इससे एक फक्कड़, संघर्षजीवी, विद्रोही, चौकन्ना, निश्चयी, सजग और परिवर्तनकामी व्यक्ति परसाई का जन्म हुआ जो अपने युग के प्रति विशेष जागरूक रहा। भाषा की सहजता, कथन की वक्रता, और मोहक शैली से युक्त उनका व्यंग्य व्यक्ति और समाज जीवन से सीधा साक्षात्कार करके, उसके सारे अन्तर्विरोध, असामंजस्य, विकृति और मिथ्याचार को उद्घाटित करने की क्षमता रखता है। परसाई जी ने विलक्षण क्षमता को पाने के लिये इतिहास से कुछ बाते सिखी, कुछ अपने जमाने से जुड़ते हुये तथा कुछ दुनिया के उन जैसे लेखकों कबीर, प्रेमचन्द, निराला, आदि से विरासत के रूप में प्राप्त की। परसाई जी को सामाजिक जागरूकता ने बेचैन कर दिया है, साथ में वह प्रखर विवेक भी सौंपा है, जिससे परसाई जीवन जैसा है, उसे बेहत्तर बनाने की कोशिश में लगे हुअे है। इसलिये परसाई अपने व्यंग्य का

---

१ "आँखन देखी", "सम्पादक कमला प्रसाद", "आत्मकथ्य में से" - "हरिशंकर परसाई", - पृ॰३०।

हाथियार लेकर गलत जीवन मुल्यों को नष्ट करना चाहते है। मुल्यों में जहाँ भी खोट है, उनमें सुधार लाना चाहते है। परसाई के मतानुसार व्यंग्य एक "पाजिटिव" चीज है। उसे नकारात्मक रूप में देखना ठीक नही लगता। समाज में यह असंगत है, अकल्याणकारी है, वही व्यंग्य बतलाता है। व्यंग्य एक स्वस्थ मनुष्य, समाज व्यवस्था के प्रति आस्था रखता हैं इसलिये जो बुराई तथा बिमारी दिखाई देती हैं, उसके प्रति वह संकेत करता है। परसाई का कहना हैं की विसंगति, अन्याय, मिथ्याचार, पाखण्ड, दुमुँहापन, शोषण आदि बिमारीयो को हमने कैंसर की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया हैं, उनका अन्वेशन करना, उन्हे अर्थ देना तथा उनके कारण खोजना लेखक अपना कर्तव्य मानता हैं। अपनी बात के स्पष्टीकरण में परसाई खुद कहते हैं -- "

> "डॉक्टर अगर मरीजों को रोग बताता हैं, तो वह निराशावादी, नकारात्मक और सिनिकल नही हैं, वह आदमी को स्वस्थ करना चाहता हैं, इसलिये रोग बताता है। अगर वह रोगी से कह दे कि वह स्वस्थ हैं तो वह मर जायेगा।" १

परसाई अपने आपको बेहया मानते हैं क्योंकि अपने बारे में कहने में या अपने उपर हँसने में भी लेखक संकुचाते नही हैं। उन्होने तमाम चीजों की भाँति अपने आपको निर्मम व्यंग्य के हवाले किया हैं। अपनी तारीफ और बुराई करने में परसाई सक्षम हैं। परसाई एक "सेंसेटिव" और पैने व्यंग्य लेखक है, इसीकारण उनकी हर रचना अचूक निशाना बैठाती है। कुछ लेखक सामाजिक ऋण को अस्विकार करते हैं तो परसाई ने सामाजिक ऋण

---

१ "आँखन देखी", "सम्पादक कमला प्रसाद" - पृ.३४।

को स्वीकार कर, अपने आपको अद्वितिय बनाया है। उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में यही देखना आवश्यक है कि वे कौनसे मानवीय कारण है, जिन्होने उन्हे अद्वितिय बना दिया है।

परसाई का जन्म २२ अगस्त, १९२४ में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के "जमानी" गांव में एक साधारण श्रमजीवी परिवार में हुआ। पिता का नाम "झूमकलाल परसाई", जो जंगल में कोयला बनाने तथा बेचने का काम करते थे। यह काम एक जगह नही चलता था, इसीकारण जमानी, रहटगांव छोडते हुओ वे "टिमरनी" गांव में जा बसे। परसाई के पिताजी काम के वास्ते जगल में घूमते रहते, इसीकारण माता को ही परिवार की देखरेख करनी पडी। परसाई तेरह, चौदह उम्र के थे तो उनकी माता की प्लेग की बीमारी से मृत्यु हुअी और परिवार की जिम्मेदारी पिताजी पर आ पडी। परसाई अभि मेट्रिक भी नही हुअे थे कि मां की मृत्यु हो गयी। कोयले की ठेकदारी करनेवाले पिताजी को असाध्य बीमारी थी। इसी कारण आर्थिक अभावों के बीच पारिवारीक जिम्मेदारियां उन्हे भी उठानी पडी। परसाई के जीवन का वास्तवीक संघर्ष यही से शुरू होता है। इसी संघर्ष ने उन्हे ताकत भी दी और दुनिया की शिक्षा भी प्रदान की। परसाई एक मध्यमवर्गीय परिवार के सदस्य हैं। दो भाई, तीन बहनों का परिवार। परिवार में बहन, भानजे और भानजी। परसाई की एक बुआ थी, जो बच्चों को स्नेह तथा ममता देती रही। सभी भाई-बहनों में बड़े होने के कारण परसाई को जल्द ही जीवन से साक्षात्कार करना पड़ा। इसलिये अुन्होने हायस्कूल पास करने के बाद जंगल विभाग में नौकरी कर ली।

परसाई जी ने अपने विशिष्ट व्यक्तित्व की रक्षा करने में कामयाबी हासिल कर ली हैं। जीवन में आयी कष्टदायक और गंभीर कठिनाईयों का सामना करते करते ही वे लेखन की ओर मुड़े यह बात

बिल्कुल सही है। इस संदर्भ में परसाई स्वयम् कहते हैं —

" मैने लेखन को दुनिया से लडने के लिए एक हाथियार के रूप में अपनाया होगा। दूसरे, इसी में मैने अपने व्यक्तित्व की रक्षा का रास्ता देखा। तीसरे, अपने को अवशिष्ट होने से बचाने के लिए मैने लिखना शुरू कर दिया।" १

परसाई को परिवार तथा परिवेश के साक्षात्कार ने उन्हे बिलकुल आजाद बना दिया। साहसी बनकर वे लगातार परिस्थितियों का सामना करते रहे। और बड़े होने के नाते परिवार की जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाते रहें।

आजाद प्रवृत्ति के होने के कारण आजादी को छीननेवाली सरकार या संस्था का अधिकार परसाई जी ने अपने उपर नही जमने दिया। यही कारण है कि वे नौकरी के दायरे में आते-जाते रहे। समाज में पलनेवाली दुमुँहा प्रवृत्ति तथा दुरंगी चाले उनसे सही नही गयी। इसलिए वे इन दु:ष्प्रवृत्ति के मूल तक पहूँच गये। उन्होने देखा कि, समाज में बदमाशी के बीज बोनेवाला एक खास वर्ग होता है। परसाई को ऐसे अनुभव मिले कि जिसके कारण उन्हे इस वर्ग को समझने में काफी सरलता महसूस हुआी। समाज में प्राथ: अमीर और गरीब दो वर्ग होते है। अमीर वर्ग की हमेशा यही कोशिश रहती है की, वे दीन-दलित गरीब वर्ग के हित सिध्दान्तो को छिनकर अपने हित में इस्तेमाल करे। इस स्थिति को परसाई जी ने देखा, पहचाना और साथ ही मजदुरों, किसानों के साथ घुल-मिलकर उनके अनुभवों का अर्जन किया। वे यह भी जान गये कि देश के सामंत और पूँजीपती एक साथ है। परसाई जी ने हमेशा इसी वर्ग के खिलाफ लिखा

---

१ "हरिशंकर परसाई - व्यक्तित्व एवं कृतित्व" "डॉ॰ मनोहर देवलियाँ" - पृ॰१२।

हैं। यही कारण है कि उन्होने सांप्रदायिक और जातिय शक्तियों के खिलाफ संघर्ष के लिए व्यंग्य के अस्त्र का इस्तेमाल किया।

परसाई एक व्यक्ति नही, बल्कि एक वर्गशक्ति के रूप में समाज में विद्यमान हैं और इस वर्गशक्ति की शिक्षा उन्होने जीवन के साक्षात्कार से पायी हैं। जीवन उनके लिए सबसे बड़ा विद्यालय हैं। रचनाकार के रूप में परसाई कबीर के अनुयायी हैं। कबीर तो उनके व्यक्तित्व के रोम रोम में महसूस होता हैं। "मुझसे बुरा न कोय" कहकर कबीर ने रूढियों का खण्डन करने का प्रयास किया था। फर्क सिर्फ इतना ही हैं कि कबीर ने पद्य में व्यंग्य किया था, परसाई जी ने गद्य में। पर परसाई का आत्मसंघर्ष और आत्मव्यंग्य कबीर से भी एक दम आगे दिखाई देता हैं।

परसाई की सहानुभूति हमेशा साधारण जनता के साथ रही हैं। इसका कारण उनके जीवन का धरातल यथार्थ से जुडा हैं। उन्होने जीवन की किसी भी बुराई से कोई समझोता नही किया, उनका चित्त बिलकुल विचलित नही हुआ। इसीलिए जहाँ कही सामाजिक अनुपात बिगडा हुआ हैं, विसंगति उभरने लगी हैं, परसाई तुरंत ऐसी स्थिती को अपने व्यंग्य से फटकार देते हैं और समतोल साधने का प्रयास करते हैं।

परसाई जी के व्यक्तित्व के विकास में उनके आस-पास का परिवेश विशेष रूप से सहायक रहा हैं। इसी परिवेश से प्राप्त कितनी ही घटनाओं को परसाई जी ने कथानक का रूप दिया हैं। जीवन से प्राप्त कटु अनुभवों ने व्यक्तित्व को गढा और इस प्रक्रिया में जो अनुभूति मिली, उसने उसके भीतर के रचनाकार को व्यंग्य लिखने की प्रेरणा दी। परसाई व्यक्तिगत दु:ख के दायरे से बाहर निकले, तो उन्हे महसूस हुआ कि, मेरे सिवा और भी कितने ही लोग दु:खी हैं, अन्याय से पीडित और शोषित हैं, ऐसे समय रोने धोने से काम नही चलेगा, इन लोगों के लिए लड़ना होगा। हाथ में कलम ली,

और उसी को हथियार बनाया। इतिहास, समाज, राजनीति और संस्कृति का गहन अध्ययन करके गंभीरता से व्यंग्य लिखने लगे। और यही एक गंभीर व्यंग्य लेखक परसाई का जन्म हुआ। ऐसा कहना गलत नही होगा। समाज, जीवन, तथा मनुष्यता के उदात्त मुल्यों से जब कोई कुरूपता जुड जाती है, तो परसाई विशेष रूप से प्रखर और आक्रामक हो जाते है। आक्रामकता के इस सिलसिले में व्यंग्य कई शक्लों में सामने आता है।

अभिव्यक्ति की एक विशेष प्रतिभा परसाई जी ने पायी है, जिसने उन्हे एक असाधारण लेखक बना दिया। परसाई ने अपने आप को समाज से अलग नही माना, बल्कि आपने को एक सामाजिक मनुष्य के रूप में समाज के सामने रखा। समाज के संघर्ष से प्राप्त अनुभव और अनुभव के विश्लेषण से प्राप्त दृष्टि एवं आत्मसंघर्ष ने परसाई जी को लेखक बना दिया। नीजि प्रेरणा से सामाजिक प्रयोजन तक कितनी ही स्थितियाँ व्यंग्य लेखक के उद्देश्य के रूप में आ सकती हैं। उसमें आलोचनात्मक दृष्टि का होना नितांत आवश्यक होता है। परसाई जी में एक सार्थक आलोचनात्मक दृष्टि है। परसाई का लेखन पाठक को जिम्मेदारियों का एहसास दिलाते हुए सोचने के लिए मजबुर करता है। उनमें विसंगत स्थितियों के बदलाव की तीव्र इच्छा है, आज के यथार्थ के अन्तर्विरोधों, जटिल संक्रमणों की अंतर्भेदी पहचान है, जो गहरी सामाजिकता से संलग्न है।

परसाई एक मध्यमवर्गीय परिवार के सदस्य हैं, और स्वयम् अविवाहीत है। मैट्रिक पास होने के बाद आपने लगभग अठारह साल की उम्र में, इटारसी के पास "ताक" में जंगल विभाग में नौकरी करने लगे। उसके बाद छः महिने "खंडवा में अध्यापन किया। कितनी ही कठिनाईयों के बावजूद परसाई आगे पढ़ते रहे। उन्होने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम्.ए. पास किया। उसके बाद १९४१-४३ ये दो वर्ष जबलपुर के

"स्पेन्स ट्रेनिंग कॉलेज" में "डिप्लोमा इन टीचिंग" का अध्ययन किया। १९४३ से जबलपुर के ही मॉडेल हायस्कूल में अध्यापन का कार्य शुरू किया और १९५२ में इस्तीफा दे दिया। १९५३ से १९५७ तक प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाया, फिर अंतिम रूप से नौकरी को नमस्कार किया और तब से लगातार स्वतंत्र रूप से लेखन कर रहे हैं। १९५६ में जबलपुर से "वसुधा" नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन तथा संपादन किया। घाटे के बावजूद भी कई वर्षो तक उसे चलाया और अंत में परिस्थितियों से मजबूर होकर १९५८ में उसे बंद करना पड़ा। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में नियमीत रूप से स्तंभ लेखन किया। "पूछिये परसाई स" यह प्रश्नोत्तर का कालम "देशबन्धु" में प्रकाशित किया जाता है। "नयी दुनिया" में "सुनो भाई साधो", "नयी कहानीयों" में "पाँचवा कालम" और "उलझी-उलझी", "कल्पना" में "और अंत में" शीर्षको में स्तंभ लेखन किया। इनकी लोकप्रियता के बारे में दो मत नही है। परसाई का "ये माजरा क्या हैं" यह राजनैतिक स्वभाव का जनरुचि का कालम हैं। ये केवल एक सूचना प्रधान व्याख्या नही हैं, पर चिंतनशील साहित्यकार का विश्लेषण हैं, जो एक सुनिश्चित जीवन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक, राजनैतिक घटनाओं को परखने का प्रयास कर रहा हैं। परसाई ने एक लेखक के रूप से जिस जीवन की इच्छा रखी हैं, उसमें एक ऐसी विचारधारा विद्यमान हैं, जिसमें जीवन का ठीक विश्लेषण हो सके और ठीक निष्कर्षो पर पहूँचा जा सके। इसी धारणा के लेखक का मार्क्सवाद पर अत्यधिक विश्वास हैं।

परसाई जी की महत्पूर्ण साहित्य-सेवा के लिए लबलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हे डी•लिट्• की मानद उपाधि से विभूषित किया। अन्य पुरस्कारों के अतिरिक्त १९८२ में "साहित्य अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित। १९६२ में "विश्वशांति संम्मेलन" में भारतीय प्रतिनिधी मंडल के एक सदस्य के नाते रूस यात्रा की। परसाई की साहित्य साधना काफी समृध्द रही हैं। स्तंभलेखन के साथ साथ उन्होने कहानी, उपन्यास तथा निबन्ध लेखन किया हैं।

प्रकाशित पुस्तके —

१) कहानी संग्रह — १. हँसते हैं, रोते हैं।
२. दो नाक वाले लोग।

२) उपन्यास — १. रानी नागफनी की कहानी।
२. तट की खोज।

३) निबंध संग्रह — १. तब की बात और थी।
२. भूत के पाँव पीछे।
३. काग भगोडा।
४. सदाचार का ताबीज
५. बेईमानी की परत।
६. जैसे उनके दिन फिरे।
७. वैष्णव की फिसलन।
८. पगडंडियों का जमाना।
९. शिकायत मुझे भी है।
१०. अपनी अपनी बीमारी।
११. ठिठुरता हुआ गणतंत्र।
१२. एक लड़की पाँच दिवाने।
१३. तिरछी रेखाएं।
१४. पाखण्ड का अध्यात्म।
१५. विकलांग श्रध्दा का दौर।

तथा "और अंत में", सुनो भाई साधो", "माटी कहे कुम्हार से", आदि के रूप में लेखन किया। साथ ही कई रचनाओं के अनुवाद भारतीय और अंग्रजी भाषा में किये हैं।

परसाई का व्यंग्य लेखन हमारे अपने आस-पास के वर्तमान जीवन का वास्तविक इतिहास है। परसाई का व्यंग्य लेखन समझने में सरल और विविधगामी है। परसाई जी में प्रखर सामाजिक चेतना विद्यमान है। उनके व्यंग्य का उद्देश्य जनमुक्ति बोधक है। व्यंग्य के लिए परसाई जी ने जीस शैली को आपनाया है, उससे ऐसा लगता है कि परसाई पाठक के सामने बैठकर बाते कर रहे हैं। मानव के लिए सोचने को मजबूर कर देनेवाली दृष्टि परसाई जी में विद्यमान है। परसाई का व्यंग्य भ्रष्ट और दुष्ट समाज व्यवस्था को नकार कर उसकी जगह स्वस्थ मानवीय समाज की स्थापना से संबंधित है। और साथ ही परसाई जी ने अपने व्यंग्य लेखन के माध्यम से विवेक और विज्ञानसंमत दृष्टि को स्विकारात्म रूप में प्रस्तुत किया है।